आओ करें

आइए, अब लिखें

निम्नलिखित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. जब से मुझे याद है, मैं देख रहा हूँ, यह नीम का पेड़ इसी तरह खड़ा है। मोटा तथा खुरदरा तना, दो मोटी जड़ें ज़मीन से ऊपर उठकर नीचे गहरी चली गई हैं। ये जड़ें हम सबकी कुर्सियाँ हैं। हम चारों इन पर बैठकर गप्पें लड़ाते हैं। पेड़ दादा कभी-कभी हमारी भोली बातों पर हँसकर मीठी पकी निबोरियाँ हमें देते हैं। कभी-कभी छोटी-छोटी टहनियों से हमें डाँटते हुए कहते हैं–बैठे रहोगे, पढ़ोगे नहीं? गर्मियों में अपनी घनी पत्तियों से हमारे ऊपर ठंडी छाया करते हैं। दूर तक फैली हुई शाखाओं और टहनियों का छाता ताने दिन-रात खड़े रहते हैं। सुबह-सुबह पक्षियों की चहचहाहट से हमें जगाते हैं। जाड़ों में पेड़ दादा जब हमें अपनी छाया से दूर धूप में खेलता देखते हैं, तो दुखी हो जाते हैं कि मेरे प्यारे बच्चे मेरे पास नहीं खेल रहे हैं। वे हवा के साथ अपनी पत्तियाँ हमारे पास भेज देते हैं कि जाओ, मेरे बच्चों के साथ खेलो। कितने अच्छे हैं, पेड़ दादा।

   (क) पेड़ दादा छोटी-छोटी टहनियों से बच्चों को क्यों डाँटते हैं?

   .....

   (ख) नीम का पेड़ बच्चों को मीठी-मीठी निबोरियाँ क्यों देता है?

   .....

   (ग) 'वे हवा के साथ अपनी पत्तियाँ हमारे पास भेज देते हैं कि जाओ, मेरे बच्चों के साथ खेलो।'–इस कथन से लेखक का क्या अभिप्राय है?

   .....

   (घ) नीम के पेड़ को बच्चे पेड़ दादा क्यों कहते हैं?

   .....

   (ङ) 'कितने अच्छे हैं, पेड़ दादा।'–इस कथन से बच्चों का पेड़ दादा के प्रति कौन-सा भाव प्रकट होता है?

   .....

2. दुख के वर्ग में जो स्थान भय का है, वही स्थान आनंद वर्ग में उत्साह का है। भय से हम प्रस्तुत कठिन स्थिति से विशेष रूप से दुखी और कभी-कभी उस स्थिति से अपने को दूर रखने के लिए प्रयत्नवान भी होते हैं। उत्साह में हम आने वाली कठिन स्थिति के भीतर साहस के अवसर के निश्चय द्वारा प्रस्तुत कर्म-सुख को उमंग से प्राप्त करने के लिए अवश्य प्रयत्नवान होते हैं। उत्साह में कष्ट या हानि सहने की दृढ़ता के साथ-साथ कर्म में प्रवृत्त होने के आनंद का योग

रहता है। साहसपूर्ण आनंद की उमंग का नाम उत्साह है। कर्म-सौंदर्य के उपासक ही सच्चे उत्साही कहलाते हैं। जिन कर्मों में किसी प्रकार का कष्ट तथा हानि सहने का साहस अपेक्षित होता है, उन सबके प्रति उत्कंठापूर्ण आनंद उत्साह के अंतर्गत लिया जाता है। कष्ट या हानि के भेद के अनुसार उत्साह के भी भेद हो जाते हैं। साहित्य मीमांसकों ने इसी दृष्टि से युद्धवीर, दानवीर, दयावीर इत्यादि भेद किए हैं। इनमें सबसे प्राचीन और प्रधान युद्धवीरता है, जिसमें आघात, पीड़ा तो क्या मृत्यु तक की परवाह नहीं होती।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

.....

(ख) उत्साह से आप क्या समझते हैं?

.....

(ग) सच्चे उत्साही कौन कहलाते हैं?

.....

(घ) कष्ट या हानि के अनुसार उत्साह के भेद बताइए।

.....

(ङ) सबसे प्राचीन और प्रधान वीरता कौन-सी है?

.....